INTERNATIONAL BACCALAUREATE
BACCALAURÉAT INTERNATIONAL
BACHILLERATO INTERNACIONAL

HINDI / HINDI / HINDI A1

Standard Level / Niveau Moyen (Option Moyenne) / Nivel Medio

Thursday 13 May 1999 (afternoon)/Jeudi 13 mai 1999 (après-midi)/Jueves 13 de mayo de 1999 (tarde)

Paper / Épreuve / Prueba 1 3h

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

Do NOT open this examination paper until instructed to do so.

This paper consists of two sections, Section A and Section B.

Answer BOTH Section A AND Section B.

Section A: Write a commentary on ONE passage. Include in your commentary answers to ALL the questions set.

Section B: Answer ONE essay question. Refer mainly to works studied in Part 3 (Groups of Works); references to other works are permissible but must not form the main body of your answer.

INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

NE PAS OUVRIR cette épreuve avant d'y être autorisé.

Cette épreuve comporte deux sections, la Section A et la Section B.

Répondre ET à la Section A ET à la Section B.

Section A: Écrire un commentaire sur UN passage. Votre commentaire doit traiter TOUTES les questions posées.

Section B: Traiter UN sujet de composition. Se référer principalement aux œuvres étudiées dans la troisième partie (Groupes d'œuvres); les références à d'autres œuvres sont permises mais ne doivent pas constituer l'essentiel de la réponse.

INSTRUCCIONES PARA LOS CANDIDATOS

NO ABRA esta prueba hasta que se lo autoricen.

En esta prueba hay dos secciones: la Sección A y la Sección B.

Conteste las dos secciones, A y B.

Sección A: Escriba un comentario sobre UNO de los fragmentos. Debe incluir en su comentario respuestas a TODAS las preguntas de orientación.

Sección B: Elija UN tema de redacción. Su respuesta debe centrarse principalmente en las obras estudiadas para la Parte 3 (Grupos de obras); se permiten referencias a otras obras siempre que no formen la parte principal de la respuesta.

भाग 'क'

नीचे दो उद्धरण दिए गए हैं, १(क) तथा १(ख) । इन दोनों में से किसी एक पर व्याख्या लिखिए ।

१(क)

"यह बतलाना बेकार होगा । आप मेरे दृष्टिकोण को नहीं समझ सकते, न मैं आपका समझ सकता हूं । हम दोनों के बीच ज़माने की गहरी खाई है, उसे दूर नहीं किया जा सकता ।"

"तब उस भलेमानस से, जिसे जबान दी जा चुकी है, क्या कहा जाएगा ? उसे हम किस तरह मुंह दिखा सकेंगे ? और समाज के लोग क्या कहेंगे ?" मैंने देखा, बाबा से लेकर छोटे चचा तक सभी लोग विक्षुब्ध हो उठे हैं ; मुंह न दिखा सकने का भय ह्रदय को उद्वेलित किये हुए है, और इस लज्जा और सामाजिक अपमान का कारण मुझे ही मानकर सबों की क्रूर दृष्टि मेरी ही ओर टिकी हुई है । मेरा दम घुटने लगा । मैंने जान छुड़ाकर भागना चाहा, पर ऐसा नहीं कर सका । प्रतिक्षण ऐसा बोध हो रहा था कि घने जंगल में शेर की दो क्रूर आँखें मुझ पर जमी हुई हैं, और कुछ ही क्षणों में मैं उसका कलेवा बना चाहता हूं । मैंने अनुभव किया, मैं समाज के आगे बैठा हूं । जीवन में पहली बार आज समाज से मेरा मुकाबला हुआ है । ये झुर्रियों वाले बाबा, जिनकी गोद में खेलकर मैं बड़ा हुआ हूं, इस समय समाज की मूर्त्त आत्मा हैं । इस समय उनसे पुराने स्नेह का दावा करना मूर्खता होगी । पिता जिन्होंने रक्त-दान से मुझे मानव शरीर दिया है, और वात्सल्य तथा स्नेह का दावा जिनका सबसे ज़बरदस्त है, इस समय पिता नहीं, समाज के एक कठोर अंग हैं । मुझे जान या अनजान में जन्म देकर, उन्होने जो उपकार मुझ पर किया है, उसका कुछ बदला लेने के लिए आज वे कटिबद्ध हैं ; आज काली के मन्दिर में यत्नपूर्वक रखी हुई तलवार की तरह अपने परंपरागत अधिकार का प्रयोग मुझ पर करके ही रहेंगे । मैं समझ गया, समाज रूढ़ियों का भयानक शस्त्र लिए मेरा बलिदान करने को उद्यत है । इस विपत्ति से बच सकना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है ।

चचाजी की तीखी आवाज़ फिर सुनाई दी - "देखो ! वचन दिया जा चुका है, अब वह वापस नहीं लिया जा सकता । तुम्हें शादी करनी पड़ेगी ।" यही बात अगर मुलामीयत से कही गई होती, तो मैं शायद इन्कार नहीं कर सकता; पर यह प्रहार नहीं सहा गया । मुंह से निकल गया - "जिन्होंने वचन दिया है, वे खुद ब्याह करके वचन का निबाह ......।"

"सोनिया", त्रिवेणी प्रसाद, 1996
त्रिपथगा, पोस्ट बाक्स नम्बर 9307, दिल्ली

- अपने विचारों की प्रस्तुत करने के लिए लेखक ने कैसी हिन्दी का प्रयोग किया है ?

- शब्दावली के विषय पर विचार विमर्श करते हुए लेखक ने कैसी शब्दावली अपनाई है ?

- लेखक के विचार कहां तक मान्य हैं ?

- अपने विचारों की ग्राह्य बनाने के लिए लेखल ने उन्हें पाठक के सामने कैसे प्रस्तुत किया है ?

१(ख)

उड़ान

बावजूद इसके कि
मेरे सपनों पर लगे हैं
रस्मों, रिवाजों के पहरे
सिराहने धरी है
परंपराओं की पोटली
मेरे अपने गुजरते हैं हर बार
मेरे सपनों से होकर

हर बार
रक्त के कुछ कतरे
बिखर जाते हैं इर्द-गिर्द
वे शुभचिंतक हैं मेरे
मेरे पालनहार-जन्मदाता
उंगली पकड़कर
चलना सिखते हैं अब तक मुझको
मेरे दामन को
देखना चाहते हैं
बेदाग, पाक-साफ
लगाते हैं पाबंदियां
मेरे सपनों
मेरी उड़ानों पर।

मैं अच्छी हूं ...
और गढ़ते हैं वे
ढेरों परिभाषाएं
आदर्श लड़की को लेकर
अपने पैरों पर
चलना सिखाया उन्होंने ही
और .....
अब जबकि अपने पैरों को
बगैर किसी लाठी के
आगे बढ़ाया मैंने
वे कहते हैं
'मेरे पांव डगमगाने लगे हैं'
वे बताते हैं
कि पैरों के बीच हो
कितना फासला
कितने कदम चलें आगे
कितने कदम पीछे
कि चाल संतुलित हो सके
मेरी नजरों का उठना
उनकी दुनिया पर भारी पड़ना
मेरी झुकी हुई नजरें
उनके सिर का ऊंचा उठना।
बावजूद इसके कि
झेला अपनी आत्मा पर
प्रहार बलात्कार अपनों से ही
हर बार मेरे आहत मन को
समझाया इस तरह उन्होंने
कि
लड़की की नियति है - झेलना

मैं अच्छी थी
क्योंकि
नहीं कसी थीं मुट्ठियां अब तक
कि
नियति को स्वीकारा था मैंने
कि ईश्वर, पुराण, दर्शन का
असली चेहरा
न होने दिया बेनकाब
कि
भूल चुकी हूं पाखंडी ईश्वर
ज्ञान, दर्शन सड़ते संबंधों को
शुभचिंतको आओ, देखो
मेरे पांव डगमगाने लगे हैं।

देखो, गौर से देखो
मेरी कसी मुटठियों को
मेरे सपनों - मेरी उड़ानों को
देखो, परखो तो सही
अपनी नजरों में ऊंचा उठना
कितना सुखद हो सकता है।

इंदिरा राठौर, आजकल मई-जून 1995, प्रकाशन विभाग, पटियाला हाउस, नई दिल्ली ।

- कविता का केन्द्रीय भाव क्या है?

- विषय वस्तु के लिए कावित्री द्वारा अनुभवों का वर्णन करने के लिए उड़ान का चुनाव किस हद तक मान्य है ?

- कविता की वर्णनात्मक शैली कितनी सफल है ?

- क्या इस कविता को काल्पनिक कहा जा सकता है ?

भाग 'ख'

नीचे दिए हुए विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए । इस भाग में आपका उत्तर 'पार्ट ३' की पढ़ी हुई रचनायों में से, कम से कम दो रचनायों पर आधारित होना चाहिए । आप दूसरी कृतियों का भी उल्लेख कर सकते/सकती हैं, परन्तु आपके निबंध का मुख्य भाग कम से कम दो कृतियों पर आधारित होना चाहिए ।

भक्ति काव्य

या

२ भक्ति काव्य और इस काल की जिन रचनायों को आपने पढ़ा है उनके आधार पर इन कृतियों की सामानताओं और भिन्नताओं पर टिप्पणी कीजिए ।

या

३ भक्ति काव्य में भक्तों की निजी भावनायों का सुन्दर वर्णन है । अपने उत्तर में उन कृतियों का उल्लेख कीजिए तथा और रचनायों से उनकी तुलना कीजिए जिन्हें आपने पढ़ा है ।

नाटक

या

४ नाटक देखने में जो आनंद है वो पढ़ कर कभी भी प्राप्त नहीं हो सकता । इस कथन से आप कहां तक सहमत हैं ? जिन नाटकों को आपने पढ़ा है उनके आधार पर टिप्पणी कीजिए ।

या

५ नाटकों की भाषा बोल चाल की भाषा होनी चाहिए । जिन नाटकों को आपने पढ़ा है उनके संदर्भ में उत्तर दीजिए ।

कविता (१)

या

६ इस काल के काव्य में प्रकृति तथा नारी के सौंदर्य में प्रेम की अभिव्यंजना की गई है, जिन रचनायों को आप ने पढ़ा है उनके आधार पर आप कहां तक सहमत हैं ?

या

७ इस काल की कवितायों में व्यक्तिगत भावनायों की प्रधानता है । जिन रचनायों को आपने पढ़ा है उनकी भाषा- शैली और काल्पनिक पक्षों का उल्लेख करते हुए इस कथन पर टिप्पणी कीजिए ।

कविता (२)

या

८ इस काल की कविता में असन्तोष, दु:ख और निराशा का स्वर है फिर भी कुछ कवि आशावान हैं। जिन रचनाओं को आपने पढ़ा है उनके आधार पर इस पर टिप्पणी कीजिए ।

या

९ क्या आधुनिक कविता सरलता और प्रभावपूर्णता के संतुलित योग में अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकती है ? जिन रचनाओं को आपने पढ़ा है उनके आधार पर टिप्पणी कीजिए ।

निबंध एवम् आत्मकथा

या

१० आत्मकथा लिखना "आत्मा" को अच्छी कथा में प्रस्तुत करना है। जिन आत्मकथाओं को आपने पढ़ा है उनकी वर्णनात्मक शैली के आधार पर टिप्पणी कीजिए ।

या

११ एक निबंध में कौन से गुण होने चाहिए ? जिन निबंधों को आपने पढ़ा है उनमें पाए जाने वाले साहित्यिक गुणों के आधार पर उत्तर दीजिए ।

उपन्यास में ग्राम्य-जीवन का चित्रण

या

१२ उपन्यासों में मुख्य रूप से उपन्यासकारों का उददेश्य सामाजिक जीवन का चित्रण करना रहा है। उपन्यासों मे वर्णित घटनाओं के आधार पर इस कथन का विश्लेषण कीजिए ।

या

१३ उपन्यासों में ग्राम्य-जीवन सीधा-सादा है जिन उपन्यासों को आपने पढ़ा है उनके आधार पर टिप्पणी कीजिए ।